आज भी तमाम पढ़ी-लिखी लड़कियों की व्यथा है।
अतः इस प्रकार की समस्या के प्रति (जागरूकता)
प्रदान करना ही एकांकीकार का मुख्य उद्देश्य रहा है

निष्कर्ष :-

वैवाहिक की दृष्टि से प्रस्तुत एकांकी सर्वथा सफल सिद्ध हुई है उमा की कठोर बातों से गोपाल प्रसाद के प्रति कठोर नारी जागरण का सन्देश देता है।

Q हिन्दी एकांकी की संरचनागत वैशिष्ट्य पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए ?

A एकांकी दृश्य विधा 'रूपक' का ही एक प्रकार होता है। यह एक अंक में पूर्ण होता है। आधुनिक युग में एकांकी का स्वतंत्र विधा के रूप हुआ एकांकी का शिल्पगत स्वरूप नाटक से मिलता-जुलता होता है मगर यह कलेवर में कहानी के समान संक्षिप्त होता है। एकांकी की तकनीक नाटकीय कौशल के साथ लेकिन गतिमान कार्य व्यापार में शीघ्रतावाली तथा दर्शक में कौतूहल, विस्मय और जिज्ञासा पैदा करने वाली होती है। परिस्थितियों के द्वन्द्व या टकराहटों से ही एकांकी चरम तक पहुँचता है। यह द्वन्द्व पात्र में स्वयं अन्तर्द्वन्द्व के रूप में या पात्रों के बीच की टकराहट में उभरता है।

एकांकी में आकार छोटा, कथावस्तु एक घटना

(4) देशकाल और वातावरण :- एकांकी में देश काल वातावरण से रोचकता बढ़ती है। एकांकी में जिस देश काल के संबंध में कथावस्तु को गढ़ा जाता है। उसमें उस जगह के समय के अनुरूप सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक पृष्ठभूमियों का संकेत निहित होता है। रीढ़ की हड्डी एकांकी में हमारे समाज का वातावरण सजीव हो उठता है, लड़का पक्ष के नखरे और लड़की पक्ष की बेबशी अभूत चित्रण है। संकलन त्रय को प्रस्तुत एकांकी का पूर्णरूप से पालन हुआ है। सारा कथानक बाबू राम स्वरूप के मकान में घटित होता है। जो केवल एक बैठक ही है। इसमें विवाह तय होने के समय लड़की देखने की कु-प्रथा का सजीव चित्रण दर्शक पर प्रभाव छोड़ जाता है। संक्षेप में देशकाल और वातावरण को निम्न रूप में लिखा जा सकता है —

देश — भारत।

काल — आधुनिक युग।

वातावरण — (विवाह का वातावरण) वर पक्ष द्वारा वधु पक्ष को देखने का वातावरण।

(5) अभिनेता या अभिनयशीलता :—

एकांकी की सफलता उसकी अभिनेयता पर आधारित होता है। नाटकीय एवं हृदय स्पर्शी

(अभिभावकों) की प्रति जागरूक है। वह आधुनिक युग की पढ़ी लिखी तेज समझदार लड़की का प्रतिनिधित्व कर रही है। उसे श्रृंगार सजना पसन्द नहीं है। वह जैसी है वैसे ही अपने आप को पेश करना चाहती है। मुरली भी एकांकी में नौकर वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

अतः पात्र और चरित्र चित्रण की दृष्टि से यह एकांकी पूर्णतः सफल एकांकी माना जा सकता है।

③ संवाद — संवाद के माध्यम से पात्रों के चरित्र का उद्घाटन होता है। इसके द्वारा एकांकीकार अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है। एकांकी में संवाद जितना छोटी होता है उसकी सफलता उतनी ही मानी जाती है। संवाद नाटकीय सौन्दर्य की सृष्टि करते है। रीढ़ की हड्डी एकांकी का संवाद भी इन्हीं गुणों से युक्त है। इसका संवाद अत्यन्त संक्षिप्त है।

उदाहरण :—

गोपाल प्रसाद : (समोसा उठाते हुये) कभी नहीं साहब कभी नहीं
रामस्वरूप : (शंकर की तरफ मुखातिब होकर) (आपका क्या ख्याल है, शंकर बाबू.
रामस्वरूप : मर्दों की शादी तय करने में खुशखुशी का हिस्सा कितना होना चाहिये।

निर्धारित महत्व होती है। इन्हीं के द्वारा एकांकीकार
अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता है। पात्र द्वारा
की कथा का विकास होता है। पात्र मूलतः दो
प्रकार के हो सकते हैं — प्रधान पात्र और गौण
पात्र।

इस एकांकी में भी पात्र कथानक के विकास में
सहायक सिद्ध हुए हैं। इसमें भी मूलतः दो प्रकार के
पात्रों के देखने को मिलता है प्रधान पात्रों में —
उमा, रामस्वरूप, गोपाल प्रसाद सरस्वती।
और गौण पात्र में — शंकर पात्र
की संख्या अधिक नहीं है। अतः इसमें कथावस्तु
की जटिलता नहीं होने पाई है। पात्रों का चरित्र
चित्रण भी उनके व्यक्तित्व के अनुसार ही हुआ है।

रीढ़ की हड्डी एकांकी की मुख्य उमा है। वह
समाज की शिक्षित लड़कियों की स्थिति का प्रति-
निधित्व करती है। इन दोनों के चरित्र यह स्पष्ट
करते हैं कि लड़की के विवाह के लिए उसके माता-
पिता को झुकना पड़ता है। रामस्वरूप के मन में
उनके होने वाले आगामी समधी के विचारों के
प्रति विरोध भाव हमें दिखाई पड़ता है। परन्तु यह
विरोध केवल उनके मन में विरोध बनकर दफन
हो जाता है वे गोपाल दास और शंकर स्वार्थी-
की पक्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं उमा का चरित्र
बड़ी स्वाभाविकता से चित्रित हुआ है। वह अपने

प्रक्रिया की आधार शिला है। इसी के माध्यम से चरित्रों की सृष्टि भी होती है। कथानक ऐतिहासिक राजनैतिक, पौराणिक, धार्मिक किसी भी तरह का हो सकता है। कार्य की अवस्था की दृष्टि से एकांकी को तीन भागों में बांटा जा सकता है,

① आरंभ ② विकास और ③ चरमोत्कर्ष।

रीढ़ की हड्डी एकांकी की कथावस्तु अत्यंत संक्षिप्त है। एकांकी का आरंभ गोपाल प्रसाद और शंकर के आने के प्रसंग में प्रारंभ होता है। वे उमा को देखने आते हैं वे जड़ पदार्थ की तरह उसका मोल-तोल करते हैं। इसी बीच कथावस्तु का विकास होता जाता है। चरमोत्कर्ष में पहुँचकर इसकी कथावस्तु अत्यंत रोचनीय हो जाती है। उमा आधुनिक युग की पढ़ी लिखी एवं समझदार लड़की है। वह इस ढकोसले रीति-रिवाज को स्वीकार नहीं करती। अतः में वह गोपाल प्रसाद और शंकर के विचारों का विरोध करती है। वह शंकर के चाल-चलन से भी अच्छी तरह वाकिफ है। वह शंकर का भांडा फोड़ देती है। अतः में गोपाल प्रसाद और शंकर तिलमिलाकर भाग खड़े होते हैं।

③ पात्र और चरित्र चित्रण — कथावस्तु के प्रस्तुतीकरण के विकास में एकांकी के पात्रों का अपना

Q एकांकी का महत्व / तत्व ?

Ans ~~कि~~ एकांकी कला की दृष्टि से रीढ़ की हड्डी एकांकी की समीक्षा कीजिए ?

~~कि~~ रीढ़ की हड्डी एकांकी आधुनिक समाज पर एक गहरा व्यंग है। इसमें समाज में लड़की के विवाह की समस्या पर प्रकाश डाला गया है। पिता के सामने लड़की का विवाह एक समस्या है। ~~वो~~ लड़की के पिता का मन माना व्यवहार सहन करना पड़ता है समाज में लड़की की इतनी दयनीय स्थिति है कि विवाह के वक्त लड़की को इस तरह से निरीक्षण किया जाता है जैसे – लड़कियाँ मेज कुर्सियाँ हो या कुर्सी मेज हो जिसे खरीददार अच्छी तरह से देख कर मोल लगाता है। एकांकीकार जगदीश चन्द्र माथुर जी ने इस एकांकी में समाज का हो रहे स्त्री शोषण को दिखाने में सक्षम हुये है। यह एकांकी हर दृष्टि से एक सफल एकांकी है। इसमें एक महान कथा वस्तु है पात्र देश काल और वातावरण के अनुरूप है, रंगमंच पर अभिनय की दृष्टि से भी यह सफल है। साथ ही इसकी रचना एक महान उद्देश्य से की गयी है। जैसा कि ऊपर कहा गया है। नीचे एकांकी कला की दृष्टि से रीढ़ की हड्डी एकांकी कला की समीक्षा की गयी है।

कथावस्तु :- कथानक एकांकी की रचना

वर्तमान तक माना जाता है आधुनिक युग में आकर हिन्दी एकांकीयों ने भाव भाषा - शिल्प आदि सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति करते हुये तथा सत्य पाश्चात विशेषताओं को ग्रहण करते हुये हिन्दी जगत में अपने स्वतंत्र, मौलिक और स्पष्ट बना लिया है। इस युग के प्रमुख एकांकीकार ये है —

डा० रामकुमार वर्मा, भुवनेश्वर, उदय शंकर भट्ट, सेठ गोविन्द दास, जगदीश चन्द्र माथुर उपेन्द्रनाथ अश्क, विष्णुप्रभाकर, रांगेय राघव प्रभाकर माचवे, डा० लक्ष्मीनारायन लाल नारायन मिश्र, अज्ञेय, धर्मवीर भारती वृन्दावन लाल वर्मा, भगवतिचरण वर्मा, भारत भूषण अग्रवाल तथा विनोद रस्तोगी आदि प्रधान है, कई महिला एकांकीकार भी इस काल में उभर कर आयी —

श्री मती विमला लूथरा, सुर्य कुमारी, हीरा देवी चातुर्वेदी आदि है।

निष्कर्ष :- इस प्रकार हम यह निष्कर्ष पर पँहुच सकते है कि एकांकी का उद्भव विकास में हिन्दी साहित्य को एक नयी मोड़ ला दी। वर्तमान युग तक इस विधा का आशातीत उन्नति होती रही।

धारा में प्रेमचंद जी के न्याय एवं 'हरताल' प्रसिद्ध है इसी प्रकार श्री वास्तव जी ने फ्रेंच नाटककार मौलियर के अनेक प्रहसनों का हिन्दी में अनुवाद किया। इस प्रकार इस युग में एकांकीयों के विकास कि किरण दिखाई पड़ती है।

प्रसाद युग :-

यह समय संवत 1985 से तक माना जाता है जो द्विवेदी युग के पश्चात् आता है इस युग के प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद जी हैं प्रसाद जी ने साहित्य में फैली सब बातों का अंत करके हिन्दी एकांकी साहित्य को स्थिर एवं कलात्मक रूप प्रदान किया इस समय तक डा० द्विजेन्द्र लाल राय एवं रविन्द्रनाथ टैगोर के सभी प्रमुख नाटकों का हिन्दी में अनुवाद हो चुका था प्रसाद जी प्रथम संवाद प्रधान एकांकी 'एक घूंट' नामक एकांकी की रचना की इस काल के कई नवीन एकांकी कार और उनके एकांकी इस प्रकार है —

① भुवनेश्वर प्रसाद - कारवाँ
② डा० रामकुमार प्रसाद वर्मा - पृथ्वीराज की आंखें
③ डा० सत्येन्द्र — कुणाल आदि

आधुनिक युग :-

इस युग का समय सम्वत 1995 से

(3) अंग्रेजी से प्राप्त बंगला नाटकों का आदर्श।

इस काल के एकांकियों के विकास की चार धाराये मिलती है —

① हास्य व्यंग्यमय प्रहसन
② सामाजिक यथार्थ वादी।
③ पौराणिक और
④ ऐतिहासिक ।

द्विवेदी युग —

भारतेन्दु युग के पश्चात् द्विवेदी युग का का प्रारंभ एकांकीयो के विकाश में महत्वपूर्ण अवदान रखते है। इस युग में ऐसा कोई प्रतिभा वान कलाकार इस क्षेत्र में न हुआ जिसके कारण एकांकी कला को एक नया मोड़ मिला हो। परन्तु हम अवश्य इतना कह सकते है कि निरन्तर परम्परा के चलने के कारण लेखकों को भटकना नही पड़ा और हिन्दी एकांकी के विकास की मंजिल की ओर तीव्र से अग्रसर होने लगी। इस काल के एकांकियों द्वार बंगला के प्रभाव स्पष्ट है। क्योंकि राय एवं रविन्द्र नाथ टैगोर के नाटकों का अनुवाद हो चुका था बंगला के साथ साथ इस काल के एकांकियों पर इब्सन शॉ एवं गाल्स वर्दी का भी प्रभाव स्पष्ट है। इस

पर संस्कृत के एक अंक वाले रूपकों का ही प्रभाव है इनमें एकांकी कला का कोई मुख्य तत्व नहीं मिलता है फिर भी निष्कर्षत: हम यह सकते है कि हिन्दी एकांकीयों का उद्भव भारतेन्दु काल से से माना जाता है।
अब हिन्दी एकांकी के विकास पर विचार करेंगे —
हिन्दी एकांकी साहित्य के विकास क्रम को चार प्रमुख कालों में विभक्त कर सकते है। जैसे —

① भारतेन्दु युग
② द्विवेदी युग
③ प्रसाद युग और
④ आधुनिक युग।

1) भारतेन्दु युग :—

यह युग सम्वत: 1630 से 1684 तक माना जाता है इस काल के प्रमुख एकांकीकार भारतेन्दु जी है। आपका सर्वप्रथम एकांकी वैदिकी हिंसा न भवति है इसके बाद, अपने भारत जननी, प्रेम जुगीनी भारत दुर्दशा, नील देवी आदि कई रचनाये है। वे एकांकी के नाम से परिचित ही न थे, बल्कि इनके सामने तीन आदर्श थे —

(i) संस्कृत नाटकों का आदर्श।
(ii) अंग्रेजी नाटकों का आदर्श

हिन्दी एकांकी

ए एकांकी नाटक साहित्य का क्रमिक विकास पर निबन्ध लिखिए ?

ए एकांकी कला (तत्व) का महत्व ?

ए हिन्दी के एकांकी साहित्य की उद्भव विकास पर विचार कीजिए ? अथवा एकांकी के क्रमिक विकास पर विचार कीजिए ?

उ॰ हिन्दी की अन्य विधाओं की तरह संस्कृत परम्परा में एकांकी का अभाव नहीं था, यह बात निर्विवाद है कि कुछ परिस्थितियों के कारण उसका विकास आगे न हो सका। परन्तु उसका एक इतिहास तो है ही। संस्कृत के पतन एवं भारतेन्दु के साहित्य क्षेत्र में पदार्पण के बीच का समय इतना अस्त व्यस्त एवं असंयत था कि वह समय संस्कृत एकांकी परम्परा को आगे न बढ़ा सका तथा उसके विकास में बाधक सिद्ध हुआ, ऐसी परिस्थितियों में हिन्दी एकांकी का प्रारम्भ भारतेन्दु काल से ही माना जाता था। परन्तु इस विषय में विद्वानों में मतभेद है। एक ओर डा॰ रामचरण महेन्द्र एवं डा॰ सत्येन्द्र आदि भारतेन्दु जी को प्रथम एकांकीकार मानते हैं तो दूसरी ओर डा॰ नगेन्द्र डा॰ त्रिलोकीनारायण दीक्षित एवं डा॰ रामकुमार वर्मा इस तथ्य को स्वीकार नहीं करते हैं। इन विद्वानों का कहना है कि भारतेन्दु एवं उनके नाटककारों में बहुत अन्तर है इन नाटक